भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
मत्स्यपालन विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 2642
16 दिसंबर, 2025 को उत्तर के लिए

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत मछली उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि

2642. श्रीमती स्मिता उदय वाघः
श्री भोजराज नाग:
श्री गोपाल जी ठाकुरः
डॉ. हेमंत विष्णु सवरा:

क्या **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) वर्ष 2020 में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) के आरंभ के बाद से अब तक मछली उत्पादन एवं उत्पादकता (मखाना सहित) में वर्ष-वार वृद्धि का ब्यौरा क्या है और वर्तमान में उक्त योजना के अंतर्गत दरभंगा जिले सहित बिहार तथा देश में किस स्तर तक उत्पादन प्राप्त किया गया है;
(ख) पीएमएमएसवाई के कार्यान्वयन के बाद से अब तक देश भर में जलीय कृषि उत्पादकता में कितना सुधार हुआ है और उत्पादकता में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज करने वाले शीर्ष पाँच राज्य कौन से हैं और इनमें बिहार कौन-से पायदान पर है;
(ग) वर्तमान में मत्स्यपालन क्षेत्र का कृषि सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) में कितना योगदान है और 2018-19 से अब तक इस योगदान में कितनी वृद्धि हुई है;
(घ) पीएमएमएसवाई के अंतर्गत मखाना और सिंघाड़ा की खेती को किस प्रकार बढ़ावा दिया जा रहा है;
(ङ) मछली और मछली उत्पाद निर्यात का वर्तमान मूल्य कितना है और पीएमएमएसवाई के आरम्भ के बाद से अब तक निर्यात संबंधी आय में कितनी वृद्धि दर्ज की गई है;
(च) सरकार द्वारा पीएमएमएसवाई के अंतर्गत मत्स्यपालन क्षेत्र में निजी निवेश, आधुनिक जलीय कृषि अवसंरचना, प्रौद्योगिकी के प्रयोग और उद्यमिता विकास को बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं; और
(छ) विगत पांच वर्षों के दौरान महाराष्ट्र के पालघर जिले में पीएमएमएसवाई के अंतर्गत मछली उत्पादन और मत्स्यपालन क्षेत्र में आधुनिक अवसंरचना और उद्यमिता विकास का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री

(श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह)

(क) और (ख): वर्ष 2020 में प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के शुरू होने के पश्चात् भारत में मत्स्य उत्पादन एवं जलीय कृषि उत्पादकता, दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है तथा देश का कुल मत्स्य उत्पादन वर्ष 2019–20 में लगभग 141.60 लाख टन से बढ़कर वर्ष 2024–25 में लगभग ~197.75 लाख टन (अनंतिम) हो गया है, जो कि 38 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। यह वृद्धि मुख्यतः अंतर्देशीय जलीय कृषि के विस्तार, समुद्री मात्स्यिकी विकास, वैल्यू चेन इनफ्रास्ट्रक्चर के सुदृढ़ीकरण तथा प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत किए गए नीतिगत हस्तक्षेपों के परिणामस्वरूप हुई है।प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के लाँच के पश्चात् वर्ष 2020–21 से 2024–25 की अवधि के दौरान देश में, जिसमें बिहार राज्य का दरभंगा जिला भी सम्मिलित है, मत्स्य उत्पादन में दर्ज की गई वर्षवार वृद्धि का विवरण निम्नानुसार है:

मत्स्य उत्पादन (MT हजार में)	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25
भारत	147,25.00	162,48.00	175,45.00	183,93.00	197,75.00
बिहार	683.17	761.66	846.29	873.13	959.76
दरभंगा जिला, बिहार	64.22	74.50	82.60	82.75	88.28

इसके अलावा, प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के शुरु होने से पूर्व जहाँ देश की औसत जलीय कृषि उत्पादकता लगभग 3 टन प्रति हेक्टेयर थी, वहीं वर्ष 2025 के प्रारम्भ तक यह बढ़कर लगभग 4.7 टन प्रति हेक्टेयर हो गई है। अंतर्देशीय मत्स्य उत्पादन में शीर्ष पाँच राज्य आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार एवं ओडिशा हैं, जिनमें बिहार चौथे स्थान पर है।

(ग): वर्तमान मूल्यों पर मात्स्यिकी क्षेत्र का सकल मूल्य वर्धन (GVA) वर्ष 2023–24 के दौरान 3,68,124 करोड़ रुपए दर्ज किया गया है, जबकि वर्ष 2018–19 में यह 2,12,087 करोड़ रुपए था। कृषि क्षेत्र के सकल मूल्य वर्धन (GVA) में मात्स्यिकी क्षेत्र का शेयर वर्ष 2018–19 में 7 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2023–24 में 7.55 प्रतिशत हो गई है।

(घ) फॉक्स नट (मखाना) एवं सिंघाड़ा (वॉटर चेस्टनट) जैसी जलीय फसलों की खेती तथा उनकी मूल्य-शृंखला (वैल्यू चेन) का विकास मत्स्यपालन विभाग, भारत सरकार के मुख्य दायित्व के अंतर्गत नहीं आता है। तथापि, मत्स्यपालन विभाग द्वारा प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत व्यापक जलीय कृषि एवं सहायक गतिविधियों की सहायता हेतु क्लस्टर/क्षेत्र-आधारित दृष्टिकोण पर विशेष बल दिया गया है, जिसका उद्देश्य मत्स्य एवं उससे संबंधित जल-आधारित कृषि में उत्पादन, उत्पादकता, गुणवत्ता, विपणन तथा मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देना है, जिसमें उपयुक्त कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों (एग्रो-इकोलोजिकल रीजियन्स) में मत्स्य पालन के साथ-साथ मखाना एवं सिंघाड़ा की खेती भी सम्मिलित है ।

(ङ): वर्तमान में भारत के मत्स्य एवं मात्स्यिकी उत्पादों का निर्यात 62,408.45 करोड़ रुपये है, जो इस क्षेत्र के सशक्त प्रदर्शन को दर्शाता है। वर्ष 2020–21 में प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के कार्यान्वयन के पश्चात् निर्यात आय में लगभग 33.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो वर्ष 2019–20 में 46,662.85 करोड़ रुपए से बढ़कर वर्ष 2024–25 में 62,408.45 करोड़ रुपए हो गई है।

(च): मत्स्यपालन विभाग, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार मत्स्य प्रौद्योगिकी, जलीय कृषि तथा मूल्य संवर्धन के क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दे रहा है। इसके लिए मात्स्यिकी मूल्य शृंखला के समग्र विकास हेतु विभिन्न हस्तक्षेपों/गतिविधियों को सहायता प्रदान की जा रही है, जिसमें गुणवत्तापूर्ण मत्स्य बीज उत्पादन, जलीय कृषि का विस्तार, विविधीकरण एवं सघनीकरण, निर्यातोन्मुख प्रजातियों को बढ़ावा देना, प्रौद्योगिकी का समावेशन, सुदृढ़ रोग प्रबंधन एवं ट्रेसबिलिटी, प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण तथा निर्बाध कोल्ड चेन और प्रसंस्करण सुविधाओं सहित आधुनिक पोस्ट हारवेस्ट इनफ्रास्ट्रक्चर का सृजन सम्मिलित है। प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत 3,040.87 करोड़ रुपए के निवेश से 52,058 जलाशय केज, 22,057 RAS एवं बायोफ्लॉक इकाइयाँ तथा रेसवे और 1,525 समुद्री केज की स्थापना हेतु अनुमोदन के माध्यम से प्रौद्योगिकी के समावेशन एवं अंगीकरण को सुदृढ़ किया गया है। मत्स्यपालन विभाग ने फिशरीस स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) को सुदृढ़ करने हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के अंतर्गत विभिन्न अनुसंधान संस्थानों एवं निजी इनक्यूबेटरों के साथ सहयोग किया है। इसके अतिरिक्त, फिशरीस स्टार्ट-अप्स, सहकारी संस्थाओं, FPO तथा स्वयं सहायता समूहों (SHG) को व्यवसाय मॉडल विकसित करने के लिए मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण उपलब्ध कराने हेतु पाँच फिशरीस बिज़नेस इंक्यूबेशन सेन्टर्स की स्थापना को सहायता प्रदान की गई है, जिनमें— LINAC-NCDC फिशरीस बिज़नेस इंक्यूबेशन सेंटर (LIFIC), गुवाहाटी बायोटेक पार्क, असम; राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद; ICAR-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (CIFE), मुंबई तथा ICAR-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (CIFT), कोच्चि शामिल हैं।

(छ): प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत गत पाँच वर्षों के दौरान महाराष्ट्र राज्य में कुल 1,462.92 करोड़ रुपए की परियोजना लागत के लिए सहायता प्रदान की गई है। PMMSY के कार्यान्वयन के पश्चात् राज्य में मत्स्य उत्पादन वर्ष 2020–21 में 5.24 लाख टन से बढ़कर वर्ष 2024–25 में 7.43 लाख टन हो गया है, जो कि 40.27 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। महाराष्ट्र सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार, पालघर जिले में मात्स्यिकी क्षेत्र के विकास में PMMSY ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पालघर जिले में मत्स्य उत्पादन वर्ष 2020–21 में 21.45 टन से बढ़कर वर्ष 2024–25 में 138.54 टन हो गया है, जिससे 546 प्रतिशत की अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई है। पालघर जिले में आधुनिक फिशरीस इनफ्रास्ट्रक्चर के विकास एवं उद्यमिता विकास परियोजनाओं के अंतर्गत (i) साटपाटी, जिला पालघर में फिशिंग हारबर का निर्माण, (ii) ढाकाटी, दहानू में फिश लैंडिंग सेंटर का निर्माण, (iii) लागे बंदर स्थित फिश लैंडिंग सेंटर पर मछुआरों को पोस्ट हारवेस्ट सुविधाएं उपलब्ध कराना तथा (iv) दातिवरे एवं वसई खाड़ी के समीप फिश लैंडिंग सेंटर /नेविगेशन चैनल के पास ड्रेजिंग कार्य आदि सम्मिलित हैं।

****